Azim Premji Foundation

26th Edition

January,2017

Campus Associates Reflection And Experience

From Editor's Desk....

Dear friends, with the same zeal and happiness, we are going to publish the 26th edition of the CARE. And, it's become possible only with your humble support and help. We are thankful to all the writers for their precious and valuable contribution and making the edition vibrant and interesting. Further, we are hoping that you would be enjoying your work at yours respective places. As you know that, in this edition, we shall be talking about the relation between community and schools. Therefore, we came-up with the theme called *Community visit experience: interaction with parents and local community*. While working with the given theme, we got to know how the local community could impact the teaching and learning process. Accordingly, as you would explore inside the magazine you will get to know about the complexities which we faced during the process of teaching and learning process. Furthermore, we are hopeful that readers will get an opportunity to enhance their learning through the given articles in the edition.

End of the note, we would like to thanks to the contributors. We are hoping that your support and contribution will remain ever, and will be strengthening us in the future as well. With peace and 'care' we wish you happy reading.

Thanks and regards,
Care Team:(Aditya, Avais, Mehroosh, Shadhab, Sunhar)

Contants

- **Reasons For Dropout: Stories From The Field,**
  Sayan Bandyopadhyay,
  Patna, Bihar
- **How shall I Drink His Water**
  Shiva Deep Bhatt, Tonk
- **समुदायशिक्षक और बच्चे,,**
  पुष्प रंजन सिंह, पाली) राजस्थान(
- **बाल मेले के बहाने सवरती लोक संस्कृति**
  सर्वेश पाण्डेय , पौडी
- **स्कूल मेरा घर? या घर मेरा स्कूल?**
  अविनिता गौतम, Tonk, Rajasthan

REASONS FOR DROPOUT; STORIES FROM THE FIELD

The Government has been announced to close school from 5th May due to rise in temperature in Bihar on last year. So I planned to visit the nearest community and have a conversation with the parents of the students who coming to my school, U.M.S Gopalpur. One of the purpose of visit was to understand the everyday life of my students and their background. I also want to know the reason of drop out from Middle to High School. I already got some information from teachers that marriage of girls after 8th standard, poor economic background, access are some of the issues shared by them. But I was curious to hear from their parents about this.

I went to one of my student Rupam home and had a conversation with her parents and grandparents. Her father shared a short history of my school which was unknown to me. Five years ago school were closed because of no teachers. The school is around 6.5 km from block and not well connected by transportation. So teacher wouldn't come to school for teaching. It remained closed for 3 months. By the time Alam Sir came to the school as in-charge and started to run the school in a new manner. Father blamed about the current situation of the school and in his opinion no teaching and learning happening in school under new Head mistress.

After listening this story, I left the house and went to the next door. That family has different story to tell. Akanksha completed 8th standard in 2013 but nobody there with her to go high school which is 3 KM away, only two girls and family denied. So she again enrolled in 7th standard. Father was saying this year will send her to high school. But she lost interest and not much excited to join in high school. It may be because of repetition in same class and lost interest to being in school. Another student Nancy also has same kind of story. She passed out from school at 2015 and only 2 students were to go with her high school, so parents did not allowed to go. She enrolled again in 8th standard. If there are not more than 5 girls from their neighborhood to go together, they don't send their girl child to high school. I found that many students already passed out from the school but again enrolled in the same school. There are total 8 such students. Rachna story also quite similar, she enrolled in same school because of poor financial

condition and she used to go for daily wag labors. Everybody has different story to tell about their schooling. It seems everyone reason is valid. How to cross these hurdles and ensure full enrollment from middle to high school, is serious concern for thinking and discussion.

SAYAN BANDYOPADHYAY

BIKRAM, PATNA, BIHAR

How shall I drink his water?

The caste he owes,

Makes him my foe.

He shall be under my toes

It's all about my high nose.

Where shall I go from here?

Can you please tell me my dear?

I want to hold your hand.

Can I be your friend?

Ask him that I will be brutal,

His proposal on my side will be a refutal.

I am born superior.

Why shall I drink the water of an inferior?

It appears to be so strange…

The water we drink is all same.

We both share the same name,

Then why do you behave so rude?

You know! My mood in school is mostly screwed.

Just can't help you in this case,

Mother says we belong to the best race.

I really don't have an idea how?

And the food you eat smells wow!!

I want to ask it from you.

But how shall I eat the food of an inferior like you?

Because my home is surrounded by people like you…

Thus, I have the friends so few,

The friends I owe are not of my age,

Thus I feel like a bird in a cage.

I want to ask mother why it is so,

But I know she will say "no"

The bigger eyes my father will show

If I'll ever have a friend,casted low.

They say it is all because I am superior

So, how can I drink the water of an inferior?

-Shiva Deep Bhatt

Tonk, Rajasthan

“समुदाय,शिक्षक और बच्चे”

स्कूली शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य प्रत्येक बच्चे को एक अच्छा नागरिक बनाना होता हैं ,

जो भविष्य में एक अच्छे समाज का निर्माण कर सके, लेकिन स्कूली शिक्षा से पहले बच्चे अपने समाज और समुदाय से भी बहुत कुछ सीख कर आते हैं और उस समुदाय एवं उन बच्चों की मौजूदा सोच से जो मैं भी अभी तक कुछ हद तक समझ बना पाया .....

अपने स्कूल प्रैक्टिस के शुरूआती दौर में एक बार जब मैं कक्षा I और IIको एक साथ

पढ़ाने गया था, तो उस दौरान मेने बच्चों से उनका नाम तथा उनके माता पिता का नाम पूछा |लगभग सभी बच्चों के पिता के नाम तो सही बताया परन्तु औसत बच्चों ने अपनी माता के नाम को एक जैसा बताया था वो था |"मम्मी"यह शायद हमारे पुरुष प्रधान समाज में औरतों की स्थिति को बयान कर रहा था कि एक औरत समुदाय में "मम्मी"बन कर ही रह जाती हैं तथा उनको वह सम्मान तथा नाम नहीं मिल पाता है जिसकी वो हकदार होती हैं| ऐसा ही एक दूसरा वाक्या तब देखने को मिलाजब , विद्यालय प्रांगण में एक दिन एक बच्चे की माँ आयी और हम दो साथी शिक्षक कुर्सी पर बाहर बैठे थे ,मैंने अपनी कुर्सी उस' महिला' के लिए छोड़ दी ,इस पर मेरे दूसरे साथी शिक्षक) पुरुष(ने कहा ,सर" वो ऊपर नहीं बैठेगी. वो निचे ही बैठती हैं ". उनकी यह बातें सुन कर मैं स्तब्ध रह गया | यह इस समुदाय में आधी' आबादी की ' स्थिति का कड़वा सच हैं और इसी समाज का एक और पहलु फिर देखने को मिला.

विद्यालय के बाहर एक मंदिर हैं, जहाँ किसी ख़ास पूजा के मौके पर भंडाराभोज/ आयोजित किया गया था| इसमें विद्यालय के सभी शिक्षक और विद्यार्थियों को आमंत्रित किया गया था| लंच के समय में जब सभी छात्रों एवं शिक्षकों के साथ मैं वहाँ पंहुचा तो काफी भीड़ थी सभी ,छात्र मेरे साथ थे, तभी एक व्यवस्थापक ने आकर कहा ,सर" दो जात वाले बच्चों को एक साथ बैठा दोबच्चे ". भी अपने भाई और जाती देख कर बैठ गए| मैं भी उन्ही के साथ बैठ गया, मेरे साथ ही बराबर में सातवीं कक्षा का एक छात्र बैठा हुआ था ,मैंने उस से पूछा किआखिर" व्यवस्थापक ने ऐसा क्यों कहा? " उस बच्चे ने बताया ,सर" यहाँ लोग जातपात- बहुत मानते हैं ,जाति देख कर साथ बैठाते हैं और खिलाते हैं| हम लोग ऐसा नहीं सोचते, सरये" . लोग हमे अलगअलग - बिठाकर खिलाते हैं लेकिन हम स्कूल में तो साथ ही खाते हैं." ये लोग अनपढ़ हैं और इन्हें कुछ नहीं आता और ये जात पात-भी कुछ नहीं होता ,सरउस ". बच्चे के ये कुछ बाते मेरे ऊपर के तीनो परिस्थितियों के जवाब थे |

जब मैंने अपना यह अनुभव कुछ साथियों के साथ साझा किया तो मेरे एक साथी ने मुझे यह सलाह दी कि मुझे उस बच्चे से और बात करनी चाहिए थी कि उसे ये सब बातें किसने बताई, उसकी ऐसी सोच कैसे बनी बाद ? में एक दिन मैंने उस बच्चे से बात की कि आखिर उसको ये सब बातें किसने बताई या वह कहाँ से ये सब सीखा उस ? बच्चे ने बताया,सर" ,

मैडम जी सामाजिक) विज्ञान की शिक्षिकाने (सिखाया था जिसमे उन्होंने बताया कि बहुत पहले सभी एक साथ ही तो रहते थे ,सभी ने एक साथ मिलकर लड़ाईयां लड़ी ,तभी तो हमें आज़ादी मिली| सिन्धु घाटी सभ्यता में भी सभी एक साथ रहते थे ".

भविष्य में इस बच्चे की इतिहास विषय पर समझ और मजबूत बनेगी, लेकिन समुदाय वह छात्र अपनी इस सोच को शायद समाज में नहीं बता सकता और उसकी बातो को लोग यह बोलकर दबा देंगे कि वह अभी बच्चा हैं| अभी इसकी कोई नहीं सुनेगा, लेकिन कल को ये भी इस समाज के अहम नागरिक होंगे, तब तो इनकी सुनी जाएगी और तब शायद 'सुविचारों से समृद्ध समाज 'एक कल्पना नहीं बल्कि हकीकत होगी|

कि जात पात-की ये यह सोच इसको प्रभावित करती हैं और साथ ही एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि शिक्षिका ने विषय को समाज में व्याप्त विचारों से जोड़कर बताया जो यह इस बात को दर्शाता हैं कि एक समाज के निर्माण में शिक्षकों कि भूमिका कितनी महत्वपूर्ण होती हैं| शिक्षक भविष्य के लिए समाज के लिए नागरिक तैयार कर रहे होते हैं |

पुष्प रंजन सिंह

पाली(राजस्थान)

बाल मेले के बहाने सवरती लोक संस्कृति

अगर हम किसी बच्चे की पूर्ण शिक्षा या समग्र विकास की बात करें तो यह उसके स्कूली ज्ञान के अलावा सामाजिक और सांस्कृतिक ज्ञान और समझ की भी बात करता है! स्कूली ज्ञान जहाँ बच्चे की तार्किक और वैज्ञानिक सोच का विकास करती है वही उसका समाज और उसकी संस्कृति उसे संवेदनशीलता, तहजीब, और एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहना सिखाती है और इसलिए किसी इन्सान की सामाजिकता और संवेदनशीलता इस बात पर भी निर्भर करती है की उसने

अपने समाज और अपनी संस्कृति से कितना सीखा है! आज अलग-अलग समुदायों या वर्गों की संस्कृतियों का संरक्षण इसलिए भी जरूरी हो गया है क्योकि वो भी हमारे इतिहास का अभिन्न हिस्सा हैं! अब यदि सदियों से चली आ रही किसी स्थान विशेष की संस्कृति या कोई लोक संस्कृति की बात करें तो उसके संरक्षण और संवर्धन के तमाम उपाय किये जा रहे हैं या होते रहे हैं! इन्ही प्रयासों में से एक प्रयास स्कूल के कार्यशालाओ या मेलो में स्थानीय लोक संस्कृति को शामिल करने की पहल भी शामिल है जो आने वाली पीढ़ी को अपनी संस्कृति को समझने और उसे अपनाने को प्रोत्साहित करती है !

ये सारी बातें मेरे ब्लाक में कुछ दिनों पहले सम्पन्न हुए बाल मेले में यहाँ के SMC मेम्बरों, विशेषकर महिलाओ द्वारा किये गए प्रस्तुतीकरण और कार्यक्रम के पूर्व की गयी तैयारियों के अनुभव से है जिसमे बच्चों के अभिभावकों ने गढ़वाली सामूहिक गायन, सामूहिक नृत्य और सामूहिक लोक अभिनय किया! स्थानीय लोगो द्वारा स्कूलों में इस तरीके से प्रतिभाग करना कई मामलो में लाभप्रद है! जहाँ एक तरफ ये SMC मेम्बेर्स के स्कूलों से संबंधो को सुधारते हैं वही दूसरी तरफ अपने बच्चो के सामने गायन या अभिनय, बच्चो को इन अभिनयो को सीखने के लिए प्रेरित भी करते हैं साथ ही अभिभावकों का स्कूल के किसी कार्यक्रम में प्रतिभाग उनके बच्चो का स्कूल में मनोबल भी बढ़ा देता है जैसा की मैंने अनुभव किया !

मेरे अपने स्कूल के छोटे-छोटे बच्चों द्वारा स्थानीय गीतों और नृत्यों का पूरी तरीके से याद होना मेरे लिए आश्चर्य से कम नहीं था लेकिन कुछ ही दिनों बाद स्कूल में उनके अभिभावकों का प्रतिभाग उस आश्चर्य का निवारण था! स्कूलों के अलावा कई ऐसे कार्यक्रम अवश्य होते हैं जहां से बच्चे इन चीजो को सीखते हैं लेकिन बाल मेला भी उन कार्यक्रमों में से एक है!

वैसे ये बात जरूर है की इन प्राथमिक स्कूल के बच्चे समाज के एक विशेष तबके से या यूं कहे तो तथाकथित निचले तबके से आते हैं अतः समाज के बड़े वर्ग की भागीदारी इन कार्यक्रमों में जरूर वंचित रह जाती है लेकिन सत्य यह भी है की अपने परम्पराओं और अपनी संस्कृतियो का संवर्धन और निर्वहन जितना समाज के निचले समूहों में मिलता है उतना कुलीन वर्ग में कम ही मिलता है! समाज के वे बच्चे जो प्राइवेट स्कूलों में पढ़ते हैं उनके स्कूलों में भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं लेकिन उन

अभिभावकों में ज्यादातर के पास समय नहीं होता और जिनके पास समय होता है उन्हें अपने बच्चे के स्कूल में अभिनय, अपने इज्जत की तौहीन लगती है!

बौधिक विकास में स्कूलों के साथ-साथ उसके घर परिवार और समाज भी बड़ी भूमिका निभाते हैं! स्कूलों द्वारा बच्चो के कार्यक्रम में अभिभावकों को प्रतिभाग देना एक सराहनीय कदम है और अभिभावकों द्वारा प्रतिभाग करना उतना ही सराहनीय! अगर बाल-मन पर किताबी ज्ञान से कहीं ज्यादा अभिनय ज्ञान प्रभाव डालता है तब तो इस तरह के अवसर और लाभदायी हो जाते हैं! तात्पर्य यह है की शिक्षा का स्वरुप व्यापक है और किसी नयी पीढ़ी को शिक्षित करना केवल स्कूलों की पढाई से ही नहीं जुड़ा होता बल्कि ये घर परिवार के संस्कारो, सामाजिक रीति-रिवाजों और संस्कृतियों को जानने और सीखने से भी जुडी होती है और इसीलिए किसी बच्चे के समग्र

लोग (अभिभावक) समझे की बच्चे का शिक्षित होना एवं एक संवेदनशील नागरिक बनने में स्कूलों की पढाई के इतर इस तरह की छोटी-छोटी घटनाओं का भी योगदान होता है. बच्चे के भविष्य में अपने समाज और संस्कृति के प्रति उनके लगाव या उपेक्षा का कारण कुछ ऐसी ही घटनाएँ बनती हैं.

सर्वेश पाण्डेय , पौड़ी गढ़वाल

स्कूल मेरा घर? या घर मेरा स्कूल?

सोच-सोच कर घबराता हूँ,
सुबह उठ के स्कूल जाता हूँ |
मास्टरजी को कहता सुभ प्रभात,
प्रार्थना की घंटी से शुरू होता भय नाद |
पंक्ति में जाकर खड़ा हो जाता,
फिर प्रार्थना के गीत हूँ गाता,
प्रतिज्ञा को सुनकर दोहराता,

कभी गीत तो कभी कविता,
अध्यापक के भाषण सब सुनता|

कभी बिजली बचाओ तो कभी पानी बचाओ,
अरे !कोई राष्ट्रगान का मतलब भी समझाओ,
सभा समाप्त तो कक्ष में जाओ|
मास्टरजी कहते मैं उनकी बात ना सुनता,
मन में कोई शंका हूँ बुनता|
हर दिन माँ कहती स्कूल जाओ,
गुरूजी से कुछ सिख के आओ|
मास्टरजी बस पाठ पढ़ाते,
ठेरों काम घर के लिए बतलाते|
मैं उलझन में हूँ पड़ जाता,
तब कहीं कुछ समझ नहीं आता|
स्कूल मेरा घर? या घर मेरा स्कूल?

मेरा मन कहता मैं भी पढूँ,
सीखूं कुछ और आगे बढूँ,
विषय के चक्र से बाहर निकलूँ|
घर में माँ पूछती क्या आज पढ़ा,

कक्षा में क्या याद किया ?
कर अभ्यास तू बार- बार,
ताकि कर सके परीक्षा पार|

प्रथम श्रेणी के परिणाम हो तेरे,

करे पूरे तू सपने मेरे|
बेटा गाँव का नाम ऊँचा करना,

हर साल मन लगा के पढ़ना|

फिर मैं उलझन में पड़ जाता,

तब कुछ भी समझ नहीं आता|

स्कूल मेरा घर? या घर मेरा स्कूल?

-अविनिता गौतम

Tonk, Rajasthan